॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

यह कलियुग है!

परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराजके
प्रवचनोंसे संगृहीत

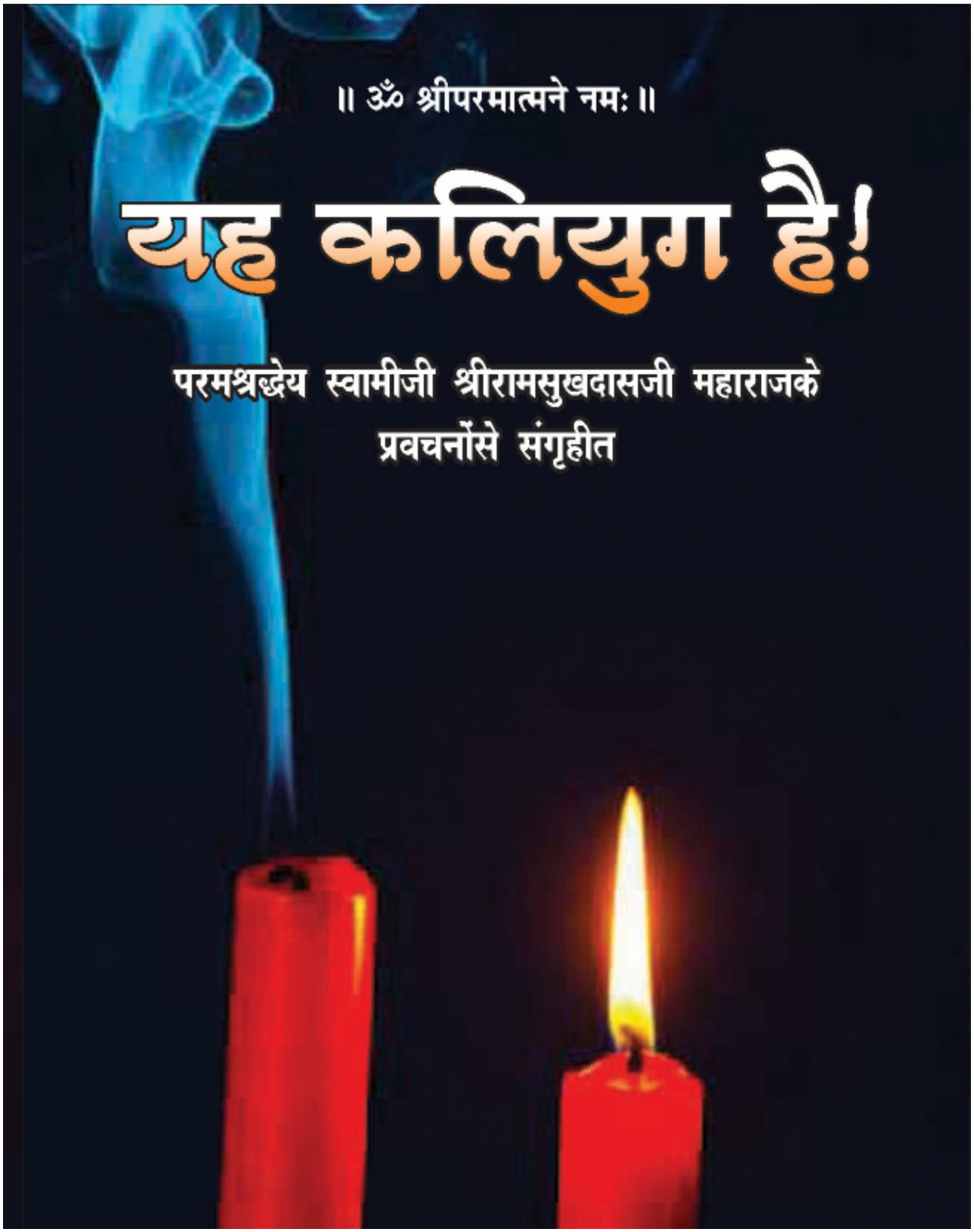

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

यह कलियुग है!

[परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराजके प्रवचनोंसे संगृहीत]

त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव
त्वमेव सर्वं मम देवदेव॥

'हे प्रभो! आप ही मेरी माता हो, आप ही पिता हो, आप ही बन्धु हो, आप ही सखा हो, आप ही विद्या हो, आप ही धन हो। हे देवदेव! मेरे सब कुछ आप ही हो।'

संकलन तथा सम्पादन—
राजेन्द्र कुमार धवन

गीता प्रकाशन, गोरखपुर

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

विषय-सूची

१. यह कलियुग है! .....

२. कलियुगके दो महापाप .....

३. कलियुगके विषयमें .....

४. कलियुगकी लीला .....

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

यह कलियुग है!

अभी कलियुग आया है। जब कोई कब्जा करनेके लिये आता है, अधिकार जमानेके लिये आता है, तब वह अपनी बातें फैलाता है, अपना भाव फैलाता है। कलियुगने आकर यह भाव फैलाया कि जात-पाँत मत मानो, शास्त्रोंको मत मानो। सन्त-महात्माओंने तथा शास्त्रोंने पहले ही कह दिया है कि कलियुग आनेपर ऐसा-ऐसा होगा। कई कहते हैं कि आपको इसका क्या पता? क्या प्रमाण है? प्रमाण आपलोग हैं, जो ईश्वरको नहीं मानते, शास्त्रोंको नहीं मानते, वेदोंको नहीं मानते। रामायणमें जहाँ कलियुगका वर्णन आया है, वहाँ आरम्भमें ही यह बात आयी है कि कलियुगमें लोग वर्णधर्मको नहीं मानेंगे, आश्रमधर्मको नहीं मानेंगे और वेद-शास्त्रोंके विरुद्ध काम करेंगे—

बरन धर्म नहिं आश्रम चारी। श्रुति बिरोध रत सब नर नारी॥

(मानस, उत्तर० ९८। १)

ऐसा अभी होने लग गया है कि वर्ण मत मानो, सबके साथ खान-पान करो, सबके साथ शादी-ब्याह करो। यह क्या है? यह कलियुगकी महिमा है, पहचान है। शास्त्रोंमें कलियुगके जो लक्षण कहे गये हैं, वह देखनेमें आ रहे हैं, यही तो कलियुगकी पहचान है! इसलिये हम सब सावधान हो जायँ। अभी तो पूरा कलियुग शुरू नहीं हुआ है। अभी कलियुगकी सन्ध्या अर्थात् द्वापर-कलियुगकी सन्धिके ३६,००० वर्ष चल रहे हैं। अभी कलियुगकी छाया आयी है।

भागवतमें आया है कि कलियुगमें पति-पत्नीमें लड़ाई होगी—**'दम्पतीनां च कल्कनम्'** (श्रीमद्भा० १। १४। ४)। यह एक विचित्र बात है! कारण कि पति और पत्नी दो होते हुए भी एक माने गये हैं। रामजीने सीताको वनमें भेज दिया तो अब अकेले यज्ञ कैसे करें? क्योंकि स्त्रीके बिना पुरुष आधा और पुरुषके बिना स्त्री आधी! अतः रामजीने सोनेकी सीता बनाकर यज्ञ किया। इतने अभिन्न स्त्री-पुरुषमें भी आपसमें लड़ाई हो जाय तो समझे कि कलियुग महाराज पधारे हैं! यह कलियुगकी पहचान है। उनमें अगर स्त्री नहीं माने, पतिसे लड़ाई करे तो समझे कि कलियुग महाराज पहले स्त्रीमें आकर बैठे हैं! अगर पुरुष नहीं माने, स्त्रीसे लड़ाई करे तो समझे कि कलियुग महाराज पुरुषमें आकर बैठे हैं! दोनोंमें आकर बैठें तो लड़ाई होगी ही! यह कोई नयी बात नहीं है, प्रत्युत कलियुगकी पहचान है। इसलिये **आपसमें खटपट होते ही सावधान हो जायँ कि यह कलियुगका प्रवेश हो गया!**

राजा परीक्षितके मुकुटमें सोना था तो उसमें कलियुग आकर बैठ गया। परीक्षितने कलियुगको सोनेमें रहनेका वरदान तो दे दिया, पर उन्हें याद नहीं आया कि मेरा मुकुट भी सोनेका है। कलियुगके प्रभावसे उन्होंने मरा हुआ साँप ऋषिके गलेमें डालकर उनका अपमान कर दिया! बादमें पश्चात्ताप हुआ कि मैंने बड़ी गलती की! परीक्षित-जैसा राजा, जिनके कारण हमें दुनियाका कल्याण करनेवाली भागवत मिली है, उनकी बुद्धिमें भी कलियुगके प्रभावसे फर्क पड़ गया! ऐसे ही स्त्रीकी बुद्धिमें फर्क पड़ जाय तो वह पतिसे लड़ने लगती है, जो कि उसका आधा अंग है। आधा अंग क्या लड़नेके लिये है? ऐसे ही पुरुष भी स्त्रियोंको बहुत दुःख देते हैं! आजकलके लड़के विवाह करनेके बाद लड़कियोंको बहुत तंग करते हैं। हमारे देखने-सुननेमें ऐसी बातें आती हैं। पुरुष स्त्रियोंपर हाथ चलाते हैं, जबकि नारी-जातिपर कभी हाथ नहीं चलाना चाहिये। यह बड़े भारी पापकी बात है! यह भी कितने पापकी बात है कि स्त्रियाँ पतिपर हाथ चलायें, उनसे मारपीट करें! यह क्या है? यह कलियुगका प्रचार है!

बुराई अच्छाईके वेशमें आती है। जो ठग होता है, वह अच्छा बनकर आता है। देवीभागवतमें आया है कि कलियुगके समय ब्राह्मणोंमें और साधुओंमें ऐसे-ऐसे राक्षस पैदा होंगे, जो भगवान्‌का नाम छुड़ा देंगे, कीर्तन छुड़ा देंगे, धर्म छुड़ा देंगे, ईश्वरकी उपासना छुड़ा देंगे! आजकलके गुरु कहते हैं कि मुझ गुरुको ही मानो, गुरुका ही चिन्तन करो, गुरुकी ही भक्ति करो। गुरुके सिवाय कुछ नहीं है। गुरु सबसे श्रेष्ठ है। **यद्यपि गुरुकी महिमा शास्त्रोंमें बहुत है, पर जो खुद गुरु बनकर लोगोंको अपनेमें लगाता है, भगवान्‌को छुड़ा देता है—वह कलियुग महाराजकी मूर्ति है।** ऐसे लोग गुरु बनकर लोगोंको ठगते हैं कि हमारी भेंट-पूजा करो। ऐसे साधुओंने स्त्रियोंके गहनेतक ले लिये! ऐसी बात मेरे पास आयी है। वह स्त्री पतिसे लड़ती है। पति मेरे पास आया कि क्या करूँ, मेरी स्त्री साधुओंकी चेली बन गयी, मेरा कहना मानती नहीं! साधुओंकी संगतिका यह परिणाम मैंने देखा है। घरके गहने-कपड़े ले जाकर गुरुजीको दे दे। यह क्या है? यह कलियुग महाराज है! कम-से-कम इसको आप पहचान तो लो कि कौन आया है? यह कलियुग महाराज आया है! मैं गुरुकी निन्दा नहीं करता हूँ, प्रत्युत गुरुके रूपमें कलियुग महाराज आये हैं, उनकी बात कहता हूँ। गुरुकी निन्दा तो कोई कर ही नहीं सकता। गुरुकी महिमा गोविन्दसे भी अधिक कही गयी है। अनन्तकालसे जन्म-मरणमें भटकता हुआ जीव गुरुकी कृपासे ठीक ठिकाने आ जाता है, उनकी कोई महिमा कह सकता है? परन्तु आज कलियुग गुरुके रूपमें आता है, ब्राह्मणके रूपमें आता है, साधुके रूपमें आता है। जहाँ रुपया अधिक पैदा हो, साधुओंकी अधिक महिमा हो, वहाँ कलियुग महाराज साधुओंका वेश धारण कर लेंगे। जहाँ ब्राह्मणोंकी महिमा हो, वहाँ दान लेनेके लिये ब्राह्मण बन जायँगे। ऐसा मैंने देखा है! यह क्या है? यह कलियुगका प्रचार है!

आज एक समुदाय कहता है कि ब्राह्मणोंको मत मानो, उनको किसी काममें मत बुलाओ, घरमें मत आने दो! साधुओंको मत मानो, उनको भिक्षा मत दो, उनके ऊपर कानून लगा दो कि वे भिक्षा माँग नहीं सकते। यह क्या है? आज पहचानमें आया कि यह कलियुग है! ठग आदमी ठगाई करने आये तो उसको कोई कैसे पहचानेगा? शास्त्रोंमें लिखा है कि कलियुगमें ऐसा-ऐसा होगा, और वह हो रहा है!

स्त्री-पुरुष दोनों मिलकर एक गृहस्थ कहलाता है। एक गृहस्थ कहलानेवालेमें भी आपसमें द्वेष, विरोध हो जाय तो यह कलियुगकी महिमा है। इसलिये आप सावधान हो जाओ। मैं किसीकी निन्दा करनेके लिये, किसीका तिरस्कार या अपमान करनेके लिये नहीं बैठा हूँ। ऐसी बातें मेरे पैदा भी नहीं होतीं। पर मेरे सामने प्रश्न आ जाते हैं तो मैं विशेषतासे खुला करके कहता हूँ। आज ही मेरे पास ऐसी बात आयी है कि स्त्रियाँ पुरुषसे बहुत लड़ाई करती हैं। मैंने विचार किया कि यह क्या है? तब यह बात आयी कि अरे! यह तो कलियुग है! कलकत्तेमें मैंने एक जवान लड़कीसे कहा कि तुम पतिको प्रणाम किया करो, तो उसने कहा कि हमारा और पतिका समान अधिकार है, हम प्रणाम क्यों करें? उसके जवाबसे मेरी आँख खुली कि अरे! यह कलियुग है!

बहनो-भाइयो, आप सब सावधान रहो। आपको कभी स्त्रीपर गुस्सा आ जाय तो समझना कि मेरेमें कलियुग आ गया! कभी पतिपर गुस्सा आये तो समझना कि राम! राम! कलियुग आ गया! भगवान्‌का नाम लो और उसको दूर करो। घरमें एक कहलानेवाले भी आपसमें दो (परस्परविरुद्ध) होते हैं तो यह कलियुगका लक्षण है।

उपनिषदोंमें आता है कि जो विद्यार्थी ब्रह्मचर्याश्रम पूरा करके गृहस्थमें जाते हैं, उनको गुरु दीक्षान्त भाषण देते हैं—

सत्यं वद। धर्मं चर। स्वाध्यायान्मा प्रमदः।

'तुम सत्य बोलो, धर्मका आचरण करो, स्वाध्यायसे कभी मत चूको।'

मातृदेवो भव। पितृदेवो भव। आचार्यदेवो भव। अतिथिदेवो भव।

(तैत्तिरीयोपनिषद् १। ११)

'तुम माँको परमात्माका स्वरूप समझो, पिताको परमात्माका स्वरूप समझो, आचार्यको परमात्माका स्वरूप समझो, अतिथिको परमात्माका स्वरूप समझो।'

अगर वे इस उपदेशका पालन नहीं करते हैं तो समझो कि कलियुगकी छाया पड़ गयी! इसलिये सावधान रहो। कलियुगकी छाया बड़े जोरसे पड़ रही है! भले-भले घरोंमें भी कलियुगकी छाया पड़ रही है! अच्छे-अच्छे वैष्णव घरोंके लड़के दूसरी जातिकी लड़कीसे विवाह कर लेते हैं। माँ-बाप बच्चेको शिक्षा देते हैं, पढ़ाते हैं, योग्य बनाते हैं। पर वे बच्चे माँ-बापकी बात नहीं मानते, उल्टे उनसे लड़ते हैं। लड़के-लड़कियाँ अपनी मरजीसे विवाह करते हैं। माँ-बाप भी बेचारे दब जाते हैं कि क्या करें? माँ-बाप बच्चोंसे डरते हैं! यह क्या है? यह कलियुग है! कलकत्तेमें मैंने लड़कोंसे कहा कि तुम माँ-बापको नमस्कार किया करो, तो वे बोले कि हम माँ-बापको नमस्कार करते हैं तो वे हमें डाँट-डपट करते हैं, गुस्सा करते हैं, पर जो सत्संग नहीं करते, नमस्कार नहीं करते, उनसे माँ-बाप डरते हैं कि कुछ कह दें तो यह भाग जायगा, आत्महत्या कर लेगा! आज समझमें आया कि यह कलियुग है!

धनि कलियुग महाराज आपने लीला अजब दिखाई है।
उलटा चलन चला दुनियां में सबकी मति बौराई है॥

स्त्री-पुरुष आपसमें लड़ें, बेटा माँ-बापसे लड़े—यह कलियुगकी अजब लीला है! संवत् २००० से पहलेकी बात है। कलकत्तेमें मैं भिक्षाको गया तो देखा कि एक लड़का अपने बेटेको गोदमें लेकर माँसे लड़ रहा है कि तू बच्चेसे लाड़-प्यार नहीं करती! मेरेको बड़ा दुःख हुआ कि राम-राम! क्या दृश्य देख रहा हूँ मैं! माँ-बापके सामने अपने लड़केसे पिता बोलता नहीं था—यह हमारे समाजकी रीति थी। कितने आश्चर्यकी बात है! ऐसी-ऐसी बातें मैंने देखी हैं। आज होश हुआ कि अरे! यह तो कलियुग महाराज आया है!

एक जवान लड़कीने मेरे सामने कहा कि मैं तो गोली (गर्भनिरोधक) खा लेती हूँ! मेरेको शर्म आयी कि पुरुषके सामने स्त्री ऐसे कैसे बोल रही है! इस (गेरुआ) कपड़ेकी भी लाज नहीं है कि मैं कैसे बोल रही हूँ! कितनी निर्लज्जताकी बात है! मेरेको शर्म आयी, पर उसको शर्म ही नहीं आयी! ऐसी-ऐसी बातें मैं सुनता हूँ, पर आज होश आया कि बात क्या है? यह कलियुग है!

जो हरिजन काम करना नहीं जानते, उनको भी नौकरी देकर बराबर तनख्वाह देते हैं। काम करानेवाले पुरुषोंने मेरेसे कहा है कि हम उनको काम सीखनेके लिये कहते हैं, पर वे सीखते नहीं; क्योंकि सीखनेपर काम करना पड़ेगा! जब बिना काम किये पैसा मिले तो काम क्यों करें? पाठशालामें भरती करनेके लिये गीताप्रेसके एक अच्छे विद्वान् पण्डित अपने बेटेको लेकर गये तो मना कर दिया कि जो सीट खाली है, वह हरिजनोंके लिये है। उसमें ब्राह्मण भरती नहीं हो सकता! ऐसी बातें मैंने कई सुनी हैं। आज ख्याल गया कि अरे! ये तो कलियुग महाराज हैं! ये उल्टा काम करेंगे ही! हरिजनोंको विशेष सम्मान देनेका मतलब क्या कि हमें वोट दे दें तो हमें राज्य मिल जाय! राज्यके लोभके वशमें होकर अन्याय कर रहे हैं।

आज आप मनुष्योंको देखो कि जिस पार्टीमें तेजी आ जायगी, उसी पार्टीमें भरती हो जायँगे। यह विचार ही नहीं है कि मेरा कर्तव्य क्या है? मैं किस पार्टीका हूँ! यह क्या है? यह कलियुग महाराज है!

जो देशके कर्णधार कहे जाते हैं, उनकी दृष्टि क्या हो रही है? उनको न्याय-अन्यायका पता ही नहीं है! कितनी-कितनी लड़ाइयाँ हो रही है! कोई राजा अपनी प्रजामें दो विभाग कर देगा तो राज्य कैसे टिकेगा? प्रजामें परस्पर स्नेह होना चाहिये, पर हिन्दुओं और मुसलमानोंमें कितना वैर पैदा हो गया! वैर पैदा वे करके समझते हैं कि हमें वोट मिल जायगा, पर यह नहीं सोचते कि दशा क्या होगी देशकी! आज इधर विचार गया कि यह तो कलियुगकी महिमा है!

बहनो-भाइयो, आपलोग सावधान रहो। जाड़ेके दिन आते हैं तो अपनी रक्षाके लिये गरम कपड़ा ओढ़ते हैं कि सरदी न लग जाय। परन्तु रक्षा करते-करते भी सरदी लग जाती है! कलियुगका ऐसा प्रभाव है कि सत्संग करते हुए, अच्छे वैष्णव परिवारमें रहते हुए भी कलियुगकी हवा लग जाती है! जो स्वार्थमें फँसकर अन्याय करते हैं, काम, क्रोध और लोभके वशमें होकर काम करते हैं, वे तो कलियुगके दास हैं ही! गीतामें काम, क्रोध और लोभको नरकोंके तीन दरवाजे कहा है—

त्रिविधं नरकस्येदं द्वारं नाशनमात्मनः।
कामः क्रोधस्तथा लोभस्तस्मादेतत्त्रयं त्यजेत्॥

(गीता १६। २१)

'काम, क्रोध और लोभ—ये तीन प्रकारके नरकके दरवाजे जीवात्माका पतन करनेवाले हैं, इसलिये इन तीनोंका त्याग कर देना चाहिये।'

काम, क्रोध और लोभको ज्यादा बल मिलता हुआ दीखे तो समझना चाहिये कि यह कलियुगकी महिमा है। जिनको तत्परतासे भगवद्भजनमें लगना चाहिये, वे साधुलोग पैसे बटोरनेमें लग रहे हैं! मान-बड़ाईमें लग रहे हैं! हमें तो इतने दिन पहचान नहीं हुई! आज पहचान हुई है कि यह कलियुग है!

कलियुग अधर्मका मित्र है—'**कलिनाधर्ममित्रेण**' (श्रीमद्भा० १। १५। ४५)। उसकी अधर्मके साथ एकता है। मैं आप सबसे प्रार्थना करता हूँ कि ऐसे कलियुगके कब्जेमें मत आओ। कलियुग बड़े जोरसे आ रहा है। सत्संग करनेवाले भाइयोंसे कहना है कि स्त्री ज्यादा तेज हो जाय और कुछ कहे तो आप चुप हो जाओ, धैर्य रखो। किसीको सन्निपात आ जाय तो वह वैद्यको गाली देता है कि तू मेरे घर क्यों आया? निकल यहाँसे! पर वैद्य बुरा नहीं मानता। ऐसे ही कोई पुरुष या स्त्री अन्यायपूर्वक तंग करे तो समझो कि इसको सन्निपात हो गया! ऐसा समझकर क्षमा कर दो।

प्रीति करहिं जौं तीनिउ भाई। उपजइ सन्यपात दुखदाई॥

(मानस, उत्तर० १२१। १६)

वात, पित्त और कफ—ये तीनों मिलकर कुपित जायँ तो सन्निपात रोग उत्पन्न हो जाता है। यह सबसे भयंकर और असाध्य रोग होता है। वैद्यकी परीक्षा सन्निपातमें होती है। जो सन्निपातको ठीक कर दे, वह अच्छा चतुर वैद्य कहलाता है।

तालाबमें जब नया जल आता है, तब पुराना और नया जल मिलनेपर एक फेन पैदा होता है, जिससे मछलियाँ मर जाती हैं—'***माजा मनहुँ मीन कहुँ ब्यापा***' (मानस, अयोध्या० १५३। ३)। ऐसे ही द्वापर और कलियुग मिलते हैं तो सन्निपात हो जाता है, धर्म नष्ट हो जाता है, मनुष्य मरते हैं।

अपने इष्टकी, अपने भजनकी कोई परवाह नहीं। बस, किसी तरहसे धन आ जाय, हाय रुपया! हाय रुपया! हाय रुपया!! यह दशा हो रही है!

टका धर्मः टका कर्मः टका हि परमं पदम्।
यस्य गेहे टका नास्ति हा टका टकटकायते॥

बस, पैसा मिल जाय। न्याय-अन्यायकी कुछ परवाह ही नहीं है। यह क्या है? यह कलियुग है!

आज विद्यार्थियोंकी, स्त्रियोंकी भी यूनियन बन गयी हैं! यह कलियुग महाराज है! यह ऐसे छिप-छिपकर आता है कि पता ही नहीं लगता! स्त्रियोंकी सुरक्षाके लिये महिला-संघ बना है, पर गर्भमें कन्या हो तो गर्भपात कर दो! ये दोनों परस्परविरुद्ध बातें कैसे? स्त्री-जातिकी रक्षा कैसे होगी? कन्याएँ कम हो जायँगी, लड़के कुँआरे रहेंगे तो जातिकी रक्षा कैसे होगी? किसीको भी मारो तो पाप लगता है, पर सबसे अधिक ब्रह्महत्याका पाप है। इन्द्रको लग गया तो उसके मुश्किल हो गयी! उस ब्रह्महत्यासे भी दुगुना पाप गर्भपातमें लगता है—

यत्पापं ब्रह्महत्याया द्विगुणं गर्भपातने।
प्रायश्चित्तं न तस्यास्ति तस्यास्त्यागो विधीयते॥

(पाराशरस्मृति ४। २०)

'ब्रह्महत्यासे जो पाप लगता है, उससे दुगुना पाप गर्भपात करनेसे लगता है। इस गर्भपातरूपी महापापका कोई प्रायश्चित्त नहीं है, इसमें तो उस स्त्रीका त्याग कर देनेका ही विधान है।'

ऐसे महापापका मैं निषेध करता हूँ तो लोग कहते हैं कि स्वामीजी समझते नहीं, यह तो सभ्यता है, समाजकी आवश्यकता है! अब इसको सामाजिक आवश्यकता कैसे समझ लिया? अरे! ये कलियुगके फेरमें आये हुए हैं! यह कलियुगकी सभ्यता है!

अधर्मं धर्ममिति या मन्यते तमसावृता।
सर्वार्थान्विपरीतांश्च बुद्धिः सा पार्थ तामसी॥

(गीता १८। ३२)

'हे पृथानन्दन! तमोगुणसे घिरी हुई जो बुद्धि अधर्मको धर्म मान लेती है और सम्पूर्ण चीजोंको उलटा मान लेती है, वह तामसी है।'

इसलिये आप सावधान रहो। कलियुगकी छाया बड़े जोर से आ रही है! जैसे शीतकाल आनेपर आप सावधान रहते हैं, गरम कपड़े पहनते हैं, गरम जल पीते हैं, ऐसे आप कलियुगसे सावधान हो जाओ।

साधुओंमें हम देखते हैं कि पहले उनके शिष्य बड़ी सेवा किया करते थे, पर आज यह दशा है कि **गुरु शिष्योंसे डरने लग गये! लड़कोंसे माँ-बाप डरने लग गये! विद्यार्थियोंसे अध्यापक डरने लग गये!** पहले शिक्षक जिस विद्यार्थीको रखना चाहते, उसे रखते, नहीं तो निकाल देते। आज विद्यार्थी जिस शिक्षकको रखना चाहते हैं, वह ठहरता है, नहीं तो शिक्षकको निकाल देते हैं! ऐसी बातें आपलोगोंके देखनेमें ज्यादा आती होंगी। मेरे सामने ऐसी बातें कम आती हैं; क्योंकि मेरा काम नहीं पड़ता। यह क्या है? यह कलियुग है! पहले सन्तोंने, शास्त्रोंने लिख दिया है कि कलियुग आनेपर ऐसा होगा, तो वह काम हो रहा है। आज पहचान हो रही है कि यह कलियुग महाराज है। इसलिये आप सावधान रहो। काम-क्रोध-लोभके वशमें मत होओ।

नारि बिबस नर सकल गोसाईं। नाचहिं नट मर्कट की नाईं॥

(मानस, उत्तर० ९९। १)

पुरुष या तो स्त्रीके गुलाम हो जायँगे, या मारपीट करने लग जायँगे! दोनों ही बातें बड़ी खराब हैं। पति होकर आप उसकी रक्षा करो। यह विचार करो कि किसी तरहसे उसका लोक और परलोक न बिगड़े। बालकोंको चाहिये कि माता-पिताकी सेवा करें। जिस अवस्थामें अपना जो कर्तव्य हो, उसका ठीक तरहसे पालन करो। साधु हो तो साधुधर्मका पालन करो। गृहस्थ हो तो गहस्थधर्मका पालन करो। कल एक भाईने पूछा कि गृहस्थ-आश्रम ऊँचा है कि साधु-आश्रम ऊँचा है? मैंने कहा कि **न साधु ऊँचा है, न गृहस्थ ऊँचा है, जो अपने कर्तव्यका ठीक पालन करे, वही ऊँचा है।** अगर ब्राह्मण अपने कर्तव्यका पालन नहीं करता तो वह शूद्रके समान है। अगर शूद्र अपने कर्तव्यका ठीक पालन करता है तो वह उस ब्राह्मणसे श्रेष्ठ है। अपने-अपने कर्तव्यका पालन करनेसे सबको परमात्माकी प्राप्ति हो सकती है—**'स्वे स्वे कर्मण्यभिरतः संसिद्धिं लभते नरः'** (गीता १८। ४५)।

श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दारसे किसीने प्रश्न किया कि नीच जातिका कोई आदमी ब्राह्मण बन सकता है क्या? उन्होंने कहा कि ब्राह्मण तो नहीं हो सकता, पर ब्राह्मणका भी पूजनीय हो सकता है! वह भजन-स्मरण करे, भगवान्‌की भक्ति करे तो ऊँचा हो जायगा! एक आर्यसमाजी भाईने बताया कि आर्यसमाजमें बहुत-से आदमी ब्राह्मण तो बन गये, पर कोई ब्राह्मण क्षत्रिय, वैश्य या शूद्र नहीं बना! सब ब्राह्मण-ही-ब्राह्मण बनते हैं! असममें व्यापार करनेवाले एक ब्राह्मण मिले थे। उनके मुखसे एक बात सुनी कि महाराज, मैं ब्राह्मण नहीं हूँ, मैं तो बनिया हूँ, दुकानदारी करता हूँ। मैं अपनेको ब्राह्मण कैसे कहूँ? आज यह बात है कि सब ब्राह्मण बनना चाहते हैं। सब जातियोंको जनेऊ दो। स्त्रियोंको भी जनेऊ दो। यह क्या है? यह कलियुग महाराज है! आप पहचान लो! मुझे तो आज अक्लमें आयी कि अरे, मैंने पहचाना ही नहीं! उनकी बातें तो बुरी लगती थीं कि वे ऐसा क्यों करते हैं? पर इधर ख्याल नहीं गया कि अरे, ये तो कलियुग महाराजके चेले हैं! कलियुगके एजेण्ट हैं! इसलिये इनसे सावधान रहो।

पहले तो हम समझे ही नहीं कि क्या बात है? ऐसा क्यों हो रहा है? मेरी वृत्ति गयी ही नहीं। ऐसा हो रहा है, यह भी मैं जानता हूँ और कलियुगको भी मैं जानता हूँ। कलियुगमें ऐसा होता है—यह बात तो समझमें आयी हुई है। परन्तु व्यक्तियोंमें ऐसे-ऐसे कलियुग आयगा—ऐसी पहचान नहीं थी। आश्चर्य तो मेरेको आता था, पर आज वृत्ति गयी कि यह कलियुग महाराज है! इसलिये मनमें आया कि भाइयों-बहनोंको हम सावधान कर दें।

[दिनांक ५.९.१९९३ को प्रातः ८ बजे भीनासर, बीकानेरमें दिये गये प्रवचनसे]

कलियुगके दो महापाप

मदिरापान

मदिरापान करनेवालेको शास्त्रोंमें महापापी कहा गया है—

ब्रह्महत्या सुरापानं स्तेयं गुर्वङ्गनागमः।
महान्ति पातकान्याहुः संसर्गश्चापि तैः सह॥

(मनुस्मृति ११। ५४)

'ब्राह्मणकी हत्या करना, मदिरा पीना, स्वर्णकी चोरी करना और गुरुपत्नीके साथ व्यभिचार करना—ये चार महापाप हैं। इन चारोंमेंसे किसी भी महापापको करनेवालेके साथ कोई तीन वर्षतक रहता है, उसको भी वही फल मिलता है, जो महापापीको मिलता है।'*

इससे सिद्ध होता है कि मदिरापान सर्वथा निन्दनीय, मांसाहारसे भी अधिक निन्दनीय और पतन करनेवाला है।

× × ×

गंगाजी सबको शुद्ध करनेवाली हैं। परन्तु यदि गंगाजीमें मदिराका पात्र डाल दिया जाय तो वह शुद्ध नहीं होता। जब मदिराका पात्र भी (जिसमें मदिरा डाली जाती है) इतना अशुद्ध हो जाता है, तब मदिरा पीनेवाला कितना अशुद्ध हो जाता होगा—इसका कोई ठिकाना नहीं है!

× × ×

मदिराके निर्माणमें असंख्य जीवोंकी हत्या होती है। मदिरापानसे होनेवाली सबसे भयंकर हानि यह है कि इससे अन्तःकरणमें रहनेवाले धर्मके अंकुर नष्ट हो जाते हैं। तात्पर्य है कि मनुष्यके भीतर जो धार्मिक भावनाएँ रहती हैं, धर्मकी रुचि, संस्कार रहते हैं, उनको मदिरापान नष्ट कर देता है। इससे मनुष्य महान् पतनकी तरफ चला जाता है।

× × ×

मदिरापान गौहत्यासे भी बढ़कर महान् भयंकर पाप है! कारण कि यह धार्मिक परमाणुओंका नाश करता है। मांस खानेसे पाप लगता है, पर मदिरापान भीतरके धार्मिक बीजोंको भूँज देता है। मदिराका पारमार्थिक बातोंके साथ विरोध है। मदिरा पीनेवालेकी बुद्धि ठीक नहीं रहती.....नहीं रहती.....नहीं रहती! मदिराको सूँघना भी मदिरा पीनेके समान माना गया है!

× × ×

एक सन्तने कहा था कि अगर एक तरफ अपने-आप मरी हुई गायका मांस हो और एक तरफ मदिरा हो तो मांस खा लो, पर मदिरा मत पियो।

गर्भपात

गर्भपातको ब्रह्महत्यारूपी महापापसे भी दुगुना पाप बताया गया है—

यत्पापं ब्रह्महत्याया द्विगुणं गर्भपातने।

---

* **स्तेनो हिरण्यस्य सुरां पिबंश्च गुरोस्तल्पमावसन्ब्रह्महा चैते पतन्ति चत्वारः पञ्चमश्चाचरंस्तैरिति।**

(छान्दोग्योपनिषद् ५। १०। ९)

प्रायश्चित्तं न तस्यास्ति तस्यास्त्यागो विधीयते॥

(पाराशरस्मृति ४। २०)

'ब्रह्महत्यासे जो पाप लगता है, उससे दुगुना पाप गर्भपात करनेसे लगता है। इस गर्भपातरूपी महापापका कोई प्रायश्चित्त नहीं है, इसमें तो उस स्त्रीका त्याग कर देनेका ही विधान है।'

× × ×

गर्भपातके समान दूसरा कोई भयंकर पाप है ही नहीं। संसारका कोई भी श्रेष्ठ धर्म इस महान् पापको समर्थन नहीं देता और न दे ही सकता है। कारण कि यह काम मनुष्यताके विरुद्ध है। क्रूर और हिंसक पशु भी ऐसा काम नहीं करते।

× × ×

गर्भमें स्थित शिशु अपने बचावके लिये कोई उपाय नहीं कर सकता, प्रतीकार भी नहीं कर सकता, अपनी रक्षाके लिये पुकार भी नहीं सकता, चिल्ला भी नहीं सकता, उसका कोई अपराध, कसूर भी नहीं है। ऐसी अवस्थामें उस निर्बल, असहाय, निरपराध, निर्दोष, मूक शिशुकी हत्या कर देना कितना महान् पाप है!

× × ×

एक कहावत है कि अपने द्वारा लगाया हुआ विषवृक्ष भी काटा नहीं जाता—'**विषवृक्षोऽपि संवर्ध्य स्वयं छेत्तुमसाम्प्रतम्**'। जिस गर्भको स्त्री-पुरुष मिलकर पैदा करते हैं, उसकी अपने ही द्वारा हत्या कर देना कितनी कृतघ्नता है! कसूर (असंयम) तो खुद करते हैं, पर हत्या बेकसूर गर्भकी करते हैं, यह कितना बडा अन्याय है!

× × ×

गर्भमें आया जीव जन्म लेकर न जाने कितने अच्छे लौकिक तथा पारमार्थिक कार्य करता, समाज तथा देशकी सेवा करता, अनेक लोगोंकी सहायता करता, सन्त-महात्मा बनकर अनेक लोगोंको सन्मार्गमें लगाता, अनेक तरहके आविष्कार करता आदि-आदि। परन्तु जन्म लेनेसे पहले ही उसकी हत्या कर देना कितना महान् पाप है, अपराध है!

× × ×

जीवमात्रको जीनेका अधिकार है। उसको गर्भमें ही नष्ट करके उसके अधिकारको छीनना महान् पाप है।

× × ×

जब मनुष्यकी हत्याको बहुत बड़ा पाप मानते हैं और अपराधी मनुष्यको भी फाँसीकी सजा न देकर आजीवन कारावासकी सजा देते हैं, तो फिर यह गर्भपात क्या है? क्या यह निरपराध मनुष्यकी हत्या नहीं है?

× × ×

गर्भमें आये जीवको अनेक जन्मोंका ज्ञान होता है, इसलिये भागवतमें उसको 'ऋषि' (ज्ञानी) नामसे कहा गया है। अतः गर्भपात करनेसे एक ऋषिकी हत्या होती है! इससे बढ़कर और पाप क्या होगा?

× × ×

लोग गर्भ-परीक्षण करवाते हैं और गर्भमें कन्या हो तो गर्भपात करा देते हैं, क्या यह नारी-

जातिको समान अधिकार देना है? क्या यह नारी-जातिका सम्मान करना है?

× × ×

संसारी लोगोंकी दृष्टिमें जो सबसे बड़ा सुख है, जिस सुखके बिना भोगी मनुष्य रह नहीं सकता, जिस सुखका वह त्याग नहीं कर सकता, उस सुखको देनेवाले गर्भकी हत्या कर देना कितना बड़ा पाप है! यह पापकी, कृतघ्नताकी, दुष्टताकी, नृशंसताकी, क्रूरताकी, अमानुषताकी, अन्यायकी आखिरी हद है! अर्थात् इससे बढ़कर अपराध कोई हो नहीं सकता।

× × ×

मनुष्यशरीरको बड़ा दुर्लभ बताया गया है। मनुष्यशरीरमें आकर जीव अपना और दूसरोंका भी कल्याण कर सकता है। परन्तु उस जीवको ऐसा दुर्लभ मौका न मिलने देना, संतति-निरोध करके उसको जन्म ही न लेने देना अथवा जन्म लेनेसे पहले ही गर्भपात करके उसकी हत्या कर देना कितना महान् पाप है!

× × ×

जो माता-पिता अपने बच्चेका स्नेहपूर्वक पालन और रक्षा करनेवाले होते हैं, वे ही अपने गर्भस्थ बच्चेकी हत्या कर देंगे तो किससे रक्षाकी आशा की जायगी?

× × ×

ऐसा महान् पाप करनेवालोंको घोर नरकों तथा नीच योनियोंकी भयंकर यातना भोगनी पड़ेगी। उनको कभी मनुष्यजन्म मिल जाय तो उसमें उनकी सन्तान नहीं होगी। सन्तानके बिना वे रोते रहेंगे!

[इस विषयको विस्तारसे समझनेके लिये गीताप्रेस, गोरखपुरसे प्रकाशित परमश्रद्धेय श्रीस्वामीजी महाराजकी ये पुस्तकें पढ़नी चाहिये—१) महापापसे बचो २) आवश्यक चेतावनी ३) गृहस्थमें कैसे रहें? ४) मातृशक्तिका घोर अपमान ५) देशकी वर्तमान दशा तथा उसका परिणाम।]

कलियुगके विषयमें

पुरानी रीति मिटाना कलियुगका खास लक्षण है। अपने रीति-रिवाज बदलोगे तो वे बदलते-बदलते मिट जायँगे अर्थात् उनको बदलना उनको मिटाना है। (ज्ञानके दीप० १२६)

× × ×

जिससे नरकोंमें जायँ, वही रिवाज कलियुगमें चलती है। (स्वाति० १५८)

× × ×

पूर्व युगोंके विधि-विधान कल्याणके लिये होते थे। परन्तु कलियुगमें वही विधि-विधान होते हैं, जिनसे नरकोंकी प्राप्ति हो जाय! (सत्संगके० ६८)

× × ×

हम देखते हैं कि पहले फाल्गुनके महीनेमें खूब हवा चलती थी, अब हवा कम हो गयी है! पाप बढ़ जानेसे पानीकी तंगी हो रही है! कुओंमें पानी नीचे जा रहा है! लोग कहते हैं कि जनसंख्या बढ़ जानेसे अन्न मिलना मुश्किल हो जायगा। हम कहते हैं कि परिवार-नियोजन और गर्भपातके परिणामस्वरूप पानी मिलना भी मुश्किल हो जायगा! पहले गंगाजीका प्रवाह विशेष ऊँचा था, अब बहुत कम हो गया! गंगाजी छोटी हो गयीं। लोग कहते हैं कि गंगाजी सौ वर्षोंमें लुप्त हो जायगी, पर हमें ऐसा दीखता है कि सौ वर्षोंके पहले ही लुप्त हो जायगी! जंगलमें बेलके बहुत वृक्ष थे और बड़े-बड़े बेल लगते थे, पर अब बेलके वृक्ष थोड़े हो गये और बेल भी छोटे-छोटे लगने लगे! हमारे देखते-देखते ये बातें हो गयीं! पहले मनुष्योंमें उदारता रहती थी, अब वह उदारता मिट गयी है। स्वार्थ बहुत ज्यादा बढ़ गया है! कुत्ते आपसमें खेलते हैं, पर रोटीको देखते ही उनमें लड़ाई हो जाती है! यह दशा आज मनुष्योंकी हो रही है!

आपलोगोंसे प्रार्थना है कि भगवान्‌को याद करो, उनके नामका जप करो, कीर्तन करो, उनके पद गाओ, उनकी लीला पढ़ो, भक्तोंके चरित्र पढ़ो, दीन-दुखियों तथा बड़े-बूढ़ोंकी सेवा करो। भगवान्‌की तरफ वृत्ति होनेसे भाव स्वतः शुद्ध होगा। भाव शुद्ध होगा तो सब लोग सुखी होंगे। भाव अशुद्ध होगा तो रक्षा होनी मुश्किल हो जायगी! **भाव अशुद्ध होनेसे दुनियामें आफत आ रही है, अकाल पड़ रहा है, वर्षा नहीं हो रही है।** अपना भाव शुद्ध बनाओ तो इससे दुनियामात्रको फायदा होगा। (बिन्दुमें० १२७-१२८)

× × ×

कलियुगके प्रभावसे सत्संगकी बातें, कथाएँ कम होती चली जायँगी। हमारे देखते-देखते कम हो गयीं। सत्संग, कथा आदिमें लोगोंकी रुचि कम हो रही है। आगे चलकर ये बातें मिलेंगी नहीं। अभी कलियुगका बड़ा भयंकर समय आ रहा है, सावधान हो जाओ! भजन-ध्यानमें विशेषतासे लगो और दूसरोंको भी लगाओ। (ज्ञानके दीप० १४०)

× × ×

अब झूठ, कपट, पापका समय आ रहा है। इससे बचना चाहिये। जैसे शीतकाल आनेपर उससे बचनेका प्रयत्न करते हैं, ऐसे ही वर्तमान समयसे बचो। समयके अनुसार मत चलो, प्रत्युत समयसे अपना बचाव करो। (सागरके० ११६)

× × ×

कुछ वर्षोंसे, लगभग दस वर्षोंसे कलियुगका प्रभाव जोरोंसे बढ़ रहा है। लोगोंकी बुद्धि भ्रष्ट हो

रही है! किसीने चोटी न रखनेकी आज्ञा भी नहीं दी, केवल कलियुगके प्रभावमें आकर लोगोंने चोटी रखनी छोड़ दी! (बिन्दुमें० ९२)

× × ×

गंगाजी ज्यादा दिन रहेगी नहीं। शास्त्रमें भी आया है कि कलियुग जोरसे आयेगा तो गंगाजी भी रहेगी नहीं*। ***'शिवके मुकुटमें रहती गंगा कह सहदेव विचारी। पाण्डवो, कलियुग आसी भारी'।*** गंगाजीका दर्शन नहीं होगा! गंगाजीसे जितना लाभ लेना हो, ले लो। हमारे देखते-देखते इसका प्रवाह कम हो गया, पहले जैसा नहीं रहा। चातुर्मासमें भी पहले गंगाजी जितनी बढ़ती थी, उतनी अब नहीं बढ़ती। कहते हैं कि गंगाजी सौ वर्षोंतक रहेगी, पर इसके घटते प्रवाहको देखें तो सौ वर्षोंतक रहना कठिन मालूम देता है। बहुत-सी नदियाँ नहीं रहेंगी। जंगलोंमें भी कलियुग आ गया। पहले जैसे जंगल नहीं रहे। आज जो भगवान्‌की भक्तिका प्रचार है, यह नहीं रहेगा। गीताप्रेसके द्वारा पुस्तकोंका प्रचार भी नहीं रहेगा। जमाना बड़ा विकट आनेवाला है। इसलिये सच्चे हृदयसे भगवान्‌में लग जाओ।

अभी यह दुर्लभ मौका भगवान्‌की कृपासे सुलभतासे मिल गया है, फिर मिलेगा नहीं! भगवान्‌के भजनमें रात-दिन लग जाओ। बार-बार भगवान्‌से एक ही बात माँगो कि 'हे नाथ! मैं आपको भूलूँ नहीं'। भगवान्‌को याद रखो तो सब काम अपने-आप ठीक हो जायगा। (बिन्दुमें० १६२-१६३)

× × ×

पहले मनुष्योंमें पशुता नहीं थी, अब पशुता आ गयी—यह नयी रोशनी आयी है! (ज्ञानके दीप० १९१)

× × ×

कलियुग अच्छाईके चोलेमें बुराईका प्रचार करता है। अच्छाईके चोलेमें बुराई बहुत भयंकर होती है। उससे बचना बड़ा कठिन होता है। (सागरके० १७)

× × ×

यह कलियुगकी महिमा है कि कोई अच्छा काम नहीं हो। अधर्म-ही-अधर्म हो, धर्म हो ही नहीं; क्योंकि कलियुग अधर्मका मित्र है—'**कलिनाधर्ममित्रेण**' (श्रीमद्भा० १। १५। ४५)। (नये रास्ते० ९९)

× × ×

जिस घरमें कलह, लड़ाई-झगड़ा होता है, वह घर कलियुगका स्थान बन जाता है। उस घरमें

***कलेः पञ्चसहस्रं च वर्षं स्थित्वा तु भारते।**
जग्मुस्ताश्च सरिद्रूपं विहाय श्रीहरेः पदम्॥
यानि सर्वाणि तीर्थानि काशीं वृन्दावनं विना।
यास्यन्ति सार्धं ताभिश्च वैकुण्ठमाज्ञया हरेः॥
शालग्रामः शक्तिशिवौ जगन्नाथश्च भारतम्।
कलेर्दशसहस्रान्ते त्यक्त्वा याान्ति निजं पदम्॥

(देवीभागवत ९। ८। १०-१२)

'कलिके पाँच हजार वर्षोंतक भारतवर्षमें रहकर वे तीनों देवियाँ (गंगा, सरस्वती और पद्मावती) अपने नदीरूपका परित्यागकर वैकुण्ठधाम चली जायँगी। काशी तथा वृन्दावनको छोड़कर अन्य जो भी तीर्थ हैं, वे सब श्रीहरिकी आज्ञासे उन देवियोंके साथ वैकुण्ठ चले जायँगे। कलिके दस हजार वर्ष व्यतीत होनेपर शालग्राम, शिव, शक्ति और जगन्नाथजी भारतवर्षको छोड़कर अपने स्थानपर चले जायँगे।'

ब्रह्मवैवर्तपुराण (प्रकृतिखण्ड ७) और गर्गसंहिता (अश्वमेध० ६१)-में भी यही बात आयी है। कलियुगका आरम्भ हुए (सन् २०१५ तक) लगभग ५११६ वर्ष बीत चुके हैं।

सभी आदमी दुःख पाते हैं। (नये रास्ते० १३८)

× × ×

जहाँ प्रेम है, वहाँ सत्ययुग है। जहाँ कलह है, वहाँ कलियुग है। (ज्ञानके दीप० १७५)

× × ×

कलियुग उनके लिये खराब है, जो भगवान्‌का भजन-स्मरण नहीं करते। भगवान्‌का भजन-स्मरण करनेवालोंके लिये तो कलियुग बहुत बढ़िया है! (बिन्दुमें० ४६)

× × ×

कलियुगके कारण लोगोंमें फर्क पड़ा है, भगवान्‌में कोई फर्क नहीं पड़ा है। (सीमाके० १२)

× × ×

कलियुगमें ठीक विधि-विधानसे ब्रह्मचर्य, गृहस्थ और वानप्रस्थ-आश्रमका पालन करके संन्यास-आश्रममें जाना तथा संन्यास-आश्रमके नियमोंका पालन करना बहुत कठिन है। इसलिये शास्त्रमें संन्यासको कलिवर्ज्य (कलियुगमें वर्जित) माना गया है। (साधन-सुधा० ८५४)

× × ×

कलियुगमें भगवान्‌की विशेष कृपा होती है। अन्य युगोंकी अपेक्षा कलियुगमें भगवान् जल्दी मिलते हैं। अन्य युगोंमें वर्षोंतक भजन-ध्यान करनेपर जो प्राप्ति होती है, वह कलियुगमें दिनोंमें हो जाती है! कारण कि इस समय भगवान्‌को कोई पूछता नहीं! जिसको कोई नहीं पूछता, वह वस्तु सस्ती हो जाती है। जिस वस्तुके ग्राहक ज्यादा होते हैं, वह वस्तु मँहगी होती है। आज भगवान् निकम्मे बैठे हैं; क्योंकि लोग राग-द्वेष, काम-क्रोध, लोभ-मोह आदिमें लगे हुए हैं! (बिन्दुमें० ३७)

× × ×

कलियुगमें प्रभुकी प्राप्ति, प्रभु-प्रेमकी प्राप्ति अन्य युगोंसे भी जल्दी होती है! जिस चीजके ग्राहक कम होते हैं, वह चीज सस्ती हो जाती है। कलियुगमें भगवत्प्रेम, तत्त्वज्ञानके ग्राहक कम हैं, इसलिये ये चीजें सस्ती हैं! जिस परीक्षामें विद्यार्थी बहुत ज्यादा बैठते हैं, उसमें अच्छे नम्बर पानेवाले थोड़े होते हैं। परन्तु जिसमें कम विद्यार्थी होते हैं, उसमें अच्छे नम्बरवाले ज्यादा होते हैं और पास भी ज्यादा होते हैं, नहीं तो संस्था खुद फेल हो जाय! (बिन्दुमें० १०८)

× × ×

कलियुगमें और युगोंकी अपेक्षा सुगमतासे दर्शन होते हैं। कारण कि पापोंका बाहुल्य है, इसलिये थोड़ा अच्छा काम भी ज्यादा हो जाता है। जिस परीक्षामें थोड़े विद्यार्थी बैठते हैं, वहाँ सब पास हो जाते हैं, पर जहाँ ज्यादा विद्यार्थी होते हैं, वहाँ सबका पास होना कठिन होता है। (अनन्त० १८२)

× × ×

कलियुग आनेपर भगवान् कमजोर नहीं हुए हैं। ज्यों-ज्यों समय गिरता है, त्यों-त्यों भगवान् सुगम होते हैं, सरलतासे मिलते हैं। पर कोई सच्चे हृदयसे उनको पुकारनेवाला तो हो! (सीमाके० ७९)

× × ×

सत्ययुग आदिमें बड़े-बड़े ऋषियोंको जो भगवान् प्राप्त हुए थे, वे ही आज कलियुगमें भी सबको प्राप्त हो सकते हैं। (अमृत० ५९)

× × ×

शास्त्रमें आया है कि कलियुगमें दान ही एकमात्र धर्म है; अतः जिस-किसी प्रकारसे भी दान

दिया जाय, वह कल्याण ही करता है—***'जेन केन बिधि दीन्हें दान करइ कल्यान'*** (मानस, उत्तर० १०३ ख)। इसका तात्पर्य है कि कलियुगमें यज्ञ, दान, तप, व्रत आदि शुभकर्म विधिपूर्वक करने कठिन हैं; अतः किसी तरहसे देनेकी, त्याग करनेकी आदत पड़ जाय। इसलिये जिस-किसी प्रकारसे भी दान देते रहना चाहिये। (साधक० १७। २२ परि०)

× × ×

अभी कलियुगका बड़ा क्रूर, आफत-ही-आफतका समय है। यह आफत भगवान्‌के भजनसे ही मिटेगी, और कोई उपाय नहीं है। भगवान्‌को याद करनेके समान दूसरा कोई उपाय नहीं है। (नये रास्ते० १३३)

× × ×

भयंकर कलियुगसे बचनेका उपाय है—नामजप ***'राम नाम नरकेसरी कनककसिपु कलिकाल'*** (मानस, बाल० २७)। कलियुगसे अपनी रक्षा करें। रात-दिन नामजपमें लग जाओ। भगवन्नामके सिवाय कलियुगमें कोई रक्षा करनेवाला नहीं है। (सत्संगके० ९०-९१)

× × ×

कलियुगमें कीर्तन करनेका माहात्म्य सबसे अधिक बताया गया है। कलियुगमें केवल भगवान्‌के कीर्तनसे उद्धार हो जाता है—**'कलौ तद्धरिकीर्तनात्'** (श्रीमद्भा० १२। ३। ५२)। कीर्तन करनेमात्रसे मनुष्य परमात्माको प्राप्त हो जाता है—**'कीर्तनादेव कृष्णस्य मुक्तसङ्गः परं व्रजेत्'** (श्रीमद्भा० १२। ३। ५१)। (नये रास्ते० १०५)

× × ×

भगवन्नामका जप और कीर्तन—दोनों कलियुगसे रक्षा करके उद्धार करनेवाले हैं। (अमृत० ३५)

× × ×

इस भयंकर कलियुगसे बचना चाहते हो तो हरदम 'हे नाथ! हे मेरे नाथ!' पुकारते रहो। (सीमाके० १२७)

× × ×

कलियुगसे बचनेके लिये 'हम भगवान्‌के हैं'—इस प्रकार भगवान्‌के शरण हो जाओ। जो भगवान्‌के चरणोंके शरण हो गया, उसका कलियुग कुछ नहीं बिगाड़ सकता। (बिन्दुमें० ९२)

× × ×

नल-दमयन्तीकी कथा कलियुगका प्रभाव दूर करनेवाली है। इसलिये हरेक भाई-बहनको नल-दमयन्तीकी कथा पढ़नी चाहिये। इससे बुद्धि शुद्ध होगी तथा कलियुगका असर नहीं होगा। (बिन्दुमें० ९२; एक सन्तकी०)

× × ×

भगवन्नामका जप-कीर्तन करनेसे अथवा कर्कोटक, दमयन्ती, नल और ऋतुपर्णका नाम लेनेसे कलियुग असर नहीं करता। (एक सन्तकी०)

कर्कोटकस्य नागस्य दमयन्त्या नलस्य च।
ऋतुपर्णस्य राजर्षेः कीर्तनं कलिनाशनम्॥

(महाभारत, वन० ७९। १०)

कलियुगकी लीला

[श्रीमद्भागवत, द्वादश स्कन्धपर श्रीयुत शालिग्रामवैश्यकृत भाषाटीकासे उदृधृत]

धनि कलियुग महाराज आपने लीला अजब दिखाई है।
उलटा चलन चला दुनियां में सबकी मति बौराई है॥
नीति पंथ उठ गया कचहरी पापन आन लगाई है।
धर्म गया पाताल, सभी के मन बेधरमी छाई है॥
गुप्त हुए सच्चे वकील, झूठों की बात सवाई है।
सच्चों की परतीति नहीं, झूठों ने सनद बनाई है॥
न्याय छोड़ अन्याय करैं, राजों ने नीति गँवाई है।
हकदारों का हक्क मेट, बेहकपर कलम उठाई है॥
जो हैं जाली फरेबवाले, उनकी ही बनि आई है।
उलटा चलन चला दुनियां में सबकी मति बौराई है॥ १॥

गूजर जाट बने संन्यासी पोथी बगल दबाई है।
मूड़ मुड़ाकर इक धेले में कफनी लाल रँगाई है॥
पन्थ चले लाखों, पाखण्डी अद्भुत कथा बनाई है।
मुँह काला कर दिया किसी ने सिरपर जटा रखाई है॥
हुए नीच कुरसी नसीन, ऊँचों को नहीं तिपाई है।
जुगुनू पहुँचे आसमानपर जाकर दुम चमकाई है॥
फाँके करते सन्त मिलै, भड़ुओं को दूध मलाई है।
उलटा चलन चला दुनियां में सबकी मति बौराई है॥ २॥

सास बहू से लड़ै, बहू भी आँख फेर झूँझलाई है।
लेकर मूसल हाथ कोसती दाँत पीस उठ धाई है॥
घरवाले को छोड़ गैर कर, कुल की लाज गँवाई है।
निज पति की सेवा तजकर, परपति प्रीति लगाई है॥
पुरुष हुए ऐसे व्यभिचारी विषयवासना छाई है।
वेश्याओं के फन्दे में पड़, घर की तजी लुगाई है॥
मात पिता की करै बुराई, नारि परम सुखदाई है।
उलटा चलन चला दुनियां में सबकी मति बौराई है॥ ३॥

ब्याह बुढ़ापे में जो करते उनपर गजब खुदाई है।
साठ बरस के आप, करी कन्या के संग सगाई है॥
कुछ दिन पीछे आप मर गये करके रांड बिठाई है।
लगी करन व्यभिचार लाज तजि घर घर लोग हँसाई है॥
पंडित पाधा करैं दलाली मंत्री जिनका भाई है।
शर्म रही नहिं बेशर्मों को, बेटी बेचकर खाई है॥

बहन भानजी त्यागन करके, साली न्योति जिमाई है।
उलटा चलन चला दुनियां में सबकी मति बौराई है॥ ४॥

गंगाजल गोरस को छोड़कर, गाड़ी भांग छनाई है।
भक्ष्य अभक्ष्य लगे खाने, मदिरा की होति छकाई है॥
श्वसुर बहू को कुदृष्टि देखै अपनी नीयति डुलाई है।
ठट्ठा अरु मसखरी करै सासू से ज्वान जमाई है॥
कहै भतीजा चचा से अपने, तू मूरख सौदाई है।
हमें चैन करने से मतलब, किसकी चाची ताई है॥
बहिन बहिन से लड़ै और लड़ता भाई से भाई है।
उलटा चलन चला दुनियां में सबकी मति बौराई है॥ ५॥

जामा अंगा दिया त्याग अरु पगड़ी फारि बहाई है।
पहन कोट पतलून, शीशपर टोपी गोल जमाई है॥
तोड़ तख्त अरु सिंहासन को, लाके बेंच बिछाई है।
खीर खाँड़ को त्यागन करके रोटी डबल पकाई है॥
तोड़के ठाकुरद्वारा मसजिद सबकी करी सफाई है।
गिरजाघर में जा करके ईसा की करी बड़ाई है॥
बात करै सब अँगरेजी में, निज भाषा बिसराई है।
उलटा चलन चला दुनियां में सबकी मति बौराई है॥ ६॥

मित्र शत्रुसम हुए प्रीति की डाली तोड़ जलाई है।
विद्या बिन हो गये विप्र गायत्री तलक भुलाई है॥
क्षत्रिय बैठे नारी बनकर ले तलवार छिपाई है।
बन आईना कुछ बनियों से माया मुफ्त लुटाई है॥
शूद्र हुए धनवान ब्राह्मणों ने कीन्हीं स्योकाई है।
गयाबाल और मथुरा के चौबों की बात बनि आई है॥
चारों युगों से कलि ने अपनी नई रीति दिखलाई है।
उलटा चलन चला दुनियां में सबकी मति बौराई है॥ ७॥

अपूज पूजन लगे, कहैं सब शिरपर देवी आई है।
घर घर में गुलगुले शेख सद्दो की चढ़ी कढ़ाई है॥
परब्रह्म को छोड, भूत प्रेतों की दई दुहाई है।
मूंड हिलाती कही मलिनि या कहैं कुसुम्भी माई है॥
बालभोग ठाकुर को नहिं, सय्यद के लिये मिठाई है।
सन्त को कंबल नहीं, पतुरिया को कुरती सिलवाई है॥
गुरू हरै चेलों का धन, चेला करता चतुराई है।

उलटा चलन चला दुनियां में सबकी मति बौराई है॥ ८॥

विधवा लग गई पान चबाने दे सुरमा मुसुकाई है।
नित करती शृंगार देखकर अहिवाती शरमाई है॥
बैठे ज्वारी और अगामी हुआ जगत अन्यायी है।
सब लक्षण विपरीत और घर घर में होत लड़ाई है॥
गाय जाय लाखों मारी, करता नहिं कोई सुनाई है।
इसी से पड़ता काल सृष्टि में, संपति सकल बिलाई है॥
हो दयाल हे नाथ! आज कलिजुग की महिमा गाई है।
उलटा चलन चला दुनियां में सबकी मति बौराई है॥ ९॥